ई) अनिष्ट प्रथा और परंपराओं की आलोचना।

ई) अनिष्ट प्रथा और परम्पराओं की आलोचना --

कबीर का युग सामाजिक भेदभाव, रूढ़ीवाद और वैषम्य का युग था । जहाँ एक ओर द्विज थे जिन में वर्णाश्रम की दृष्टि से ब्राह्मण सब से उच्च थे । वहाँ दूसरी ओर छोटी जातियों के लोग थे, जिन पर सब हँसते थे । कबीर इन्हीं छोटी जातियों के प्रतिनिधि थे । (` कबीर मेरी जाति कौं सभु को हँसने हार । `) जहाँ ज्ञान में ब्राह्मण सब से बडा था, वहाँ जुलाहा जाति के इस नए पैगंबर को कौन पूछता । (` तू ब्राह्मण मैं काशी का जुलहा, बुझहु मोर गिआना । `) यह ब्राह्मण वर्ग संध्या, स्नान, गायत्री को ही सब कुछ समझाता था । (` सन्धिआ प्रात इसनानु कराही । जिस भये दादूर पानी माही । `) उसने वेद स्मृति की शृंखलाओं से सारे समाज को जकड रखा था । सूतक पालन के विचार से सारा जीवन इतना कुंठित हो गया था कि स्वतंत्रचेता व्यक्ति के लिए कुछ भी करना असंभव था । यह सब फँसाने की विधियाँ थीं । छूटने की विधि कोई नहीं बताता था । उन्होंने श्राद्ध और बलि को ही उच्चतम धर्म समझा रखा था । वह जनता को स्वर्ग लोक के सुखों का भूलावा देते थे और नरक भय दिखलाते थे । मूर्तिपूजा के नाम पर वह स्वयं छत्पन्न भोग भोगते थे ।

> " भातु पहिति अरन लापसी कर कशा कासारू ।
> भोग न हारे भोगिया, इसु मूरति के मुख छारू ।। ` [१२४]

वे कदाचित यह भूल गये थे कि राम इतना भोलाभाला नहीं है कि इस सरलता से बहकावे में आ जाय । उन्होंने प्रसिद्द कर रखा था कि काशी में मृत्यु प्राप्त होने से मनुष्य सहज में ही मुक्त हो जाता है । इस प्रकार के न जाने कितने ढकोसले हिन्दू-समाज के धार्मिक बल को क्षीण कर रहे थे । सारा समाज अनेक देवी-देवताओं को पूजता था । अनेक पौराणिक कथाएँ जनता में लोकप्रिय हो रही थीं ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

यह स्पष्ट है कि कबीर हिन्दू-तत्व चिन्तन से पूर्णतः परिचित नहीं थे । उन्होंने सामान्य जीवन के हीन तत्वों पर ही अधिक ध्यान दिया । उच्च तत्व चिंतन सबके लिए सुलभ भी नहीं था । जिस प्रकार का रूढिवाद सामान्य जनता में चल रहा था, वह मानव-भाव को छोटा करता था ।

जिस तरह विशाल हिन्दू समाज पण्डितों और ब्राह्मणों से शासित हो रहा था । वे वेद-पुराण का आश्रय लेकर अपनी सत्ता की धाक जमाए हुए थे, उसी तरह मुसलमान समाज काजी-मुल्ला और कुरान (कतेब) द्वारा अनुशासित था । मुसलमान अल्लाह को मस्जिद तक ही सीमित समझते थे । कहाजाता था कि अल्लाह पश्चिम में रहता है । रोजा, नमाज, सिज्दा, हज, हिंसा (कुर्बानी) ये ही धर्म के तत्त्व मान लिए गए थे । यहाँ भी वही सब आडम्बर थे, ---- जो हिन्दू धर्म में थे । मुल्ला और शेख ने मोहम्मद का स्थान ले लिया था । सच तो यह है कि जिस तरह हिन्दू धर्म को भूल गए थे, उसी तरह मुसलमान दीन को भूल गए थे । कबीर ने इस्लामी धर्म के इस बाह्याचार की निंदा की और उन्होंने बाहर से दृष्टि हटाकर लोगों से अन्तर्मुख होने को कहा ।

और भी अनेक शक्तियाँ उस समय समाज क्षेत्र में काम कर रही थीं । कबीर ने जोगी-जंगम, नादी-वेदी, सबदी-मौनी, जपी-तपी, संन्यासी, लुंचित, मुँडित, जटार, वैष्णव, शाक्त इत्यादि अनेक धर्म साधकों का उल्लेख किया है । इन में से प्रत्येक कहता था कि, उसने सिध्दि प्राप्त कर ली है । शाक्तों से कबीर को विशेष रूप से चिढ है । वह उन्हें धिक्कारते हुए थकते नहीं । कदाचित शाक्तों का हिंसाभाव और वामाचार उन्हें पसंद नहीं था । वह उनकी वैष्णव और सूफी प्रेम-भावना के सर्वथा विपरित थे ।

" कहा सुआन कउ सिंम्रित सुनाए । कहा साकत पहि हरिगुन गाए ।
राम राम राम रमे रमि रहीऐ । साकत सिउ भूलि नहीं कहीऐ । [१२६]

परन्तु अन्य साधकों का अहंभाव भी उन्हे खलता था । पण्डितों को कुरान

का गर्व था ।जोगी ध्यान-धारणा को ही सबकुछ समझते थे । संन्यासी ब्रह्म बन बैठे थे । तापसी तप के घमंड में चूर थे । भक्ति - भाव से किसी को भी काम नहीं था । विनय-भक्ति और दया-क्षमा के महत्व को कोई भी नहीं जानता था ।

कबीर ने इस आचार हीन बाह्याडम्बर पूर्ण वातावरण को नैतिकता, सत्य और साधना की प्राणवायु द्वारा स्वच्छ करना चाहा । उन्होंने सभी धर्मों के सार तत्वों को ग्रहण किया और मनुष्य मात्र की मूल समता की ओर इंगित किया । उन्होंने अपनी रहस्यात्मक अनुभूति में सब धर्मों को एक बिन्दु पर केन्द्रीत होते हुए देखा । उनके रहस्यवाद में पूर्व-पश्चिम, हिन्दू-मुसलमान,गृहस्थी और संन्यासी, ब्राह्मण और शूद्र, सय्यद और जुलाहे सब मानवता, प्रेम और सद्भाव के समान धरातल पर उतर आए ।

उन्होंने जहाँ मुसलमानों की हिंसा की निन्दा की वहाँ हिन्दुओं की छुआ-छूत की भी भर्त्सना की ।

कबीर का युग संघर्ष का युग था । एक जाति दूसरी जाति को दबाने की चेष्टा कर रही थी । दूसरी पराजित होने पर भी हार मानने को तैयार न थी । इस का परिणाम यह हुआ कि विद्वेषाग्नि सदा भभका करती थी और धर्म की आड में इस अग्नि में ये दोनों जातियाँ नित्य प्रति होम हुआ करती थी । इन्हें देखकर कबीर की सरल और सात्विक आत्मा काँप उठी । उन्हें दोनों वर्गों के ठेकेदारों से इतनी अधिक घृणा हो गयी कि यह भयंकर क्रान्ति के रूप में व्यक्त होने लगी । उन्होंने साफ कह दिया --

`पण्डित-मुल्ला जो लिखि दीया । छाण्डि चले हम कछु न लीया ।` [१२६]

दोनों मार्गों को परित्याग कर वे ऐसे मध्य मार्ग को निकालने की चेष्टा में लग गए,जो नवीन होते हुए भी प्राचीन से संबंध बनाए हुए था । उनका सुधारवाद इसी मध्यमार्ग कीआधार भूमि पर खड़ा हुआ है । कबीर को धर्म में जप,तप,ज्ञान,

ध्यान, पूजा, आचार आदि सब व्यर्थ लगते थे । इसीलिए उन्होंने उनका सब प्रकारसे खण्डन किया । यह खण्डन किसी वर्ग विशेष तक ही सीमित नहीं है । मिथ्याचार उन्हें जहाँ-जहाँ कहीं भी दिखायी दिए, उनका उन्होंने डटकर विरोध किया । एक ओर तो वे हिन्दुओं के जप, तप, संध्या, वन्दन, माला फेरना, तीर्थव्रत, बलि, तिलक आदि का खण्डन करते थे । दूसरी ओर मुसलमानों की नमाज, रोजा, हलाल आदि की खिल्ली भी उडाते थे ।

"क्या जप क्या तप संयमी क्या व्रत क्या अस्नान ।
जब लगि मुक्ति न जानिये भाव भगति भगवान ।।" १२७

भगवान की भक्ति के बिना समस्त सांसारिक व्यवहार झूठे अर्थात व्यर्थ हैं । अज्ञानी व्यक्ति उन के प्रति चाहे जितने आसक्त क्यों न हो जाए । राम भक्ति के बिना समस्त साधनाएँ व्यर्थ हैं । मूर्ख लोग चाहे जितना उनका पालन करें सारा जप, तप झूठा है, संपूर्ण शास्त्र ज्ञान व्यर्थ हैं । राम की भक्ति के बिना समस्त ज्ञान एवं साधना झूठी हैं । शास्त्रों के द्वारा निर्धारित विधि-निषेध, पूजा-आचार का कोई अन्त नहीं हैं । ये सब नदी में डुबो देने योग्य हैं । स्वार्थी व्यक्तियों ने इन्द्रियों के भोग एवं मन को प्रसन्न करने के लिए अनेक वादों और पूजा पध्दतियों का विकास कर रखा हैं --

"हरि बिन झूठे सब ब्योहार, केते कोउ करौ गँवार । टेक
झूठा जप तप झूठा ग्यांन, राम बिन झूठा ध्यांन ।
विधि न खेद पूजा आचार, सब दरियां मैं वार न पार ।
इन्द्री स्वारथ मन के स्वाद, जहाँ सॉंच तहाँ माण्डै वाद ।।" १२८

कबीर कहते हैं " जो तू शक्ति पूर्वक जीव को मारता है, उसे तू हलाल (धर्म संगत) कहता हैं , किन्तु भगवान अपना दफ्तर (हिसाब) निकालेगा तब तेरा क्या हाल होगा ?"

"जोरी करि जिबहैं करैं, कहते हैं जा हलाल ।
जब दफ्तर देवेगा दई, तब हवैगा कौंण हवाल ।" १२९

इन खण्डनों के संबंध में एक बात ध्यान देने की है वह यह कि वे अधिकतर बुद्धिवाद पर आश्रित हैं। उनके खण्डन प्रायः सतर्क किए गए हैं।

कबीरदासजी, मुसलमानों से सवाल करते हैं अगर खुदा मस्जिद में रहता है, तो मस्जिद के बाहर का और मुलुक किसने किया है ? वैसे ही वे हिन्दुओं से भी पूछते हैं कि क्या मूर्ति में ही ईश्वर निवास करता है ? और आखिर में इन दोनों ने भी असली तत्व नहीं देखा है, यह स्पष्ट करते हैं --

" जो रे खुदाय मसिद बसतु है, अवर मुलुक किहि केरा ।
हिन्दू मूरति नाम निवासी, दुह मति ततु न हेरा ।। " १३०

उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के बाह्याचारों का ही खण्डन नहीं किया है। अवधूतों और जैनों की भी खबर ली है। अवधूत ही नहीं वैष्णवों को भी जिनको वह बडी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे - उनकी आडम्बर प्रियता के लिए लज्जित किया है।

" बैस्नौं भया तो क्या भया, बूझा नहीं विवेक ।
छापा-तिलक बनाई करि, दगध्या लोक अनेक ।। " १३१

<u>हिन्दू-वर्ण व्यवस्था का विरोध --</u>

वेद, स्मृति आदि से संबंधित हिन्दू-वर्ण व्यवस्था के प्रति कबीर का आक्रोश बहुत ही उग्र था। वे मनुष्य मात्र को समान मानते थे। जन्म से प्रत्येक व्यक्ति समान है। जाति-भेद तो मनुष्य के जन्म के उपरान्त समाज एवं धार्मिक व्यवस्था से उत्पन्न होता है। वे 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत' मान्यता का उपहास उडाते हुए, ब्राह्मणों को संबोधते हुए कहते हैं --

" जे तू बाह्मन बाह्मनी जायो
और बाट तू काहे न आयो । " १३२

जाति-पाँति का खण्डन --

भारतीय चिन्तन धारा में समानता की स्थापना करनेवाला कबीर प्रथम महापुरुष था । जिसने शास्त्रों के नाम पर प्रचलित भेद-भाव की रुढि का खण्डन करते हुए स्पष्ट उद्घोष किया ।

" जाति पाति पूछे नहिं कोई ,
हरि का भजै सो हरि का होई । ' [33]

कबीर ने धनी, निर्धन, उच्च पदस्थ, निम्न पदस्थ को एक ही स्वामी की संतति बताया और सम्मान तथा प्रतिष्ठा का आधार ज्ञान को बताया, न कि जाति को ।

तर्क का आश्रय लेकर कबीर ने तथा-कथित उच्च जाति वालों से प्रश्न किया है । ब्राह्मण, शूद्र आदि भेद-भाव बरतना अयोग्य है । यह समझाते हुए कबीरदास कहते हैं -- ' सब एक ही ईश्वरी तत्व से निर्माण हुए हैं । एक ही ज्योति से सब उत्पन्न हुए हैं । उनमें बिन्दु, मल-मूत्र, त्वचा, गुदा इन सब में समानता है , तो फिर किसे ब्राह्मण और किसे शूद्र कहा जाए ?

" एक बूँद एकै मल-मूतर, एक चाम एक गूदा ।
एक जोतिथैं सब उत्पन्ना, को ब्राह्मण को सूदा । ' [34]

छुआ-छूत --

छुआ-छूत हिन्दू समाज का एक पुराना कोढ है । कबीर के समय में यह अपनी पराकाष्ठा पर था । कबीर ने इसका विरोध किया । उनका कहना था कि जो ज्ञानी हैं उन्हें छूत नहीं लगती । वे कहते हैं कि कोई जन्मा तो सूतक, मरा तो सूतक पुनि और परज-बिगोई में भी सूतक ही सूतक । जल में, थल में और ओपनी में भी सूतक, तो पण्डित कौन पवित्र है, यह तो बता --

" जल हैं सूतक, थल हैं सूतक, सूतक ओपति होई ।
जलमें सूतक मूए सूतक,फुनि सूतक सूतक,परज-बिगोई ।
कहु रे पंडिआ कउन पविता ।"[135]

श्राध्द --

श्राध्द आदि की भी कबीरदास ने बडी आलोचना की हैं । वे कहते हैं बाह्याचार केवल दम्भ प्रेरित होते हैं । वेद और कुरान लौकिक आचरण का वर्णन करते हैं । इससे उनकी बातों को केवल लोकाचार कहा जाना चाहिए । व्यक्ति अपने सम्बन्धियों के मृत शरीर को जलाकर उसका चिह्न तक मिटा देते हैं और फिर उसके बाद रो-धोकर उसके प्रति अपनी प्रीति प्रकट करते हैं । पुत्र जीवित पिता को लठ्ठ से मारता हैं और मरने पर उसकी अस्थियों को गंगा के जल में डालने के लिए पहुँचता हैं । जीवित पिता को तो भोजन भी नहीं देता हैं और मरने पर पिण्डदान का दिखावा करता हैं । जीते जी पिता को अनेक दोष देता हैं , उसके प्रति कटु शब्द कहता हैं और मरने पर श्राध्द के नाम पर श्रध्दा की अभिव्यक्ति का स्वांग करता हैं । कबीरदास कहते हैं कि इन समस्त बाह्याचारों को देख कर मुझे आश्चर्य होता हैं । कौंवे श्राध्द के जिस अन्न को खाते हैं, उसे पितृगण कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

" ताथै कहिये लोकाचार,
वेद कतेबक थैं ब्यौहार ।। टेक ।।
जारि बारि करि आवै देहा, मूँवाँ पीछैं प्रीति सनेह ।।
जीवत पित्रहि मारहि डंगा, मूँवाँ पित्र ले घालैं गंगा ।।
जीवत पित्र कूँ अन न ख्वांवै , मूँवाँ पाछैं प्यंड भरांवै ।।
जीवन पित्र कूँ बोलैं अपराध,मूँवाँ पीछैं देहि सराध ।।
कहि कबीर मोहि अचिरज आवै,कऊवा खाइ पित्र क्यूँ पावै ।।"[136]

संध्या-गायत्री आदि --

इसी प्रकार संध्या-गायत्री,तर्पण आदि के भी कबीर विरोधी थे । धर्म के इन बाह्यांगों को लोग धर्म की आत्मा मान बैठे थे । संध्या,तर्पण और षट्कर्म आदि में लगे रहने से और चार युगों से गायत्री मंत्र पढ़ने - पढ़ाने से किसे मुक्ति मिली है ? यह प्रश्न कबीरदास उठाते हुए कहते हैं --

" संध्या तरपन अरु षट करमां,लागि रहे इनकै आशरमां ।
गायत्री जुग चार पढ़ाई,पूछौ जाइ मुकति किनि पाई ।। "[१३७]

तीर्थसेवन एवं काशी-मरण से मुक्ति --

भावनागत संस्कार की उपयोगिता के दृष्टिकोन से सभी सम्प्रदायों के केन्द्र तथा उनके प्रवर्तकों के जीवन से संबंधीत महत्वपूर्ण स्थल तीर्थ स्थान बनते गए । किन्तु समकालीन अन्य मान्यताओं की भाँति इस युग में इस में रुढता का समावेश होने के कारण मिथ्याडंबर,स्वैराचार आदि को स्थान मिल गया । जिसके कारण कबीरदास को निर्ममता से इन आस्थाओं पर भी प्रहार करना पड़ा । परमात्म-तत्त्व के घट-घट व्यापी रुप का दर्शन करनेवाले साधक संत कबीर यह बता देना चाहते थे कि ईश्वर की खोज में द्वारिका,काशी,मथुरा आदि जाना व्यर्थ है ।

" मन मथुरा दिल द्वारिका,काया कासी जांनि ।
दसवाँ द्वार देहुरा, तामैं जोति पिछांनि ।। "[१३८]

कबीरदास कहते हैं, व्यर्थ इधर-उधर तीर्थों में भटकने की आवश्यकता नहीं है । मनुष्य का मन ही मथुरा है, हृदय द्वारिकापुरी है, एवं समस्त शरीर काशी है । जिसमें ब्रह्म रंध्र ही मंदिर का द्वार है । वहाँ अपनी शक्तियाँ केन्द्रीत कर निरंजन पुरुष की ज्योति से साक्षात्कार करना ही श्रेष्ठ है ।

कबीर ने अपनी एक उक्ति में तीर्थव्रत आदि के व्यर्थाडंबरों को जंगली के सदृश्य निरुपित किया है ।

" तीरथ तै सब बेल्ड़ी, सब जग मेल्या छाइ ।
कबीर मूल निकंदिया, कौंण हलाहल खाइ । " १३९

तीर्थव्रत आदि बाह्याडम्बर सब जंगली बेल के समान हैं । जो समस्त सन्सार पर छा कर उसे अपने प्रभाव में किए हुए हैं । कबीर ने इस मिथ्या बाह्याचार रूपी लता को समूल ही नष्ट कर दिया । भला उसके विषाक्त फलों को कौन खाता ? भाव यह हैं कि बाह्याचार से उत्पन्न दुःखों और कष्टों को कौन भोगे ।

कबीरदास कहते हैं, मैं न किसी देवता की पूजा करता हूँ और न मस्जिद में जाकर नमाज ही पढ़ता हूँ । मैं तो एक मात्र निराकार परमात्मा को हृदय में धारण करके नमस्कार करता हूँ । न मैं हज (मक्का) जाता हूँ और न तीर्थों में जाकर पूजा ही करता हूँ । अब मैंने एक परमतत्त्व पहचान लिया हैं, तब फिर अन्य किसी देवता अथवा किसी साधना की मुझे क्या आवश्यक्ता हैं ? कबीरदास कहते हैं - " मेरे समस्त भ्रम नष्ट हो गए हैं और एक मात्र तत्त्व निरंजन में मेरा हृदय रम गया हैं । "

" पूजा करुं न निमाज गुजारुं, एक निराकार हिरदै नमस्कारुं ।
नाँ हज जाँऊँ न तीरथ पूजाँ, एक पिछाण्या तौ का दूजा ।।
कहैं कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूँ मन लागा ।। " १४१

कबीर के समय के समाज में धार्मिक क्षेत्र में जो दुःस्थिति थी, उसके दर्शन से कबीर का मन व्यथित हुआ । हिंदू और मुसलमान दोनों गुमराह थे । पंडित-पुजारी और मुल्ला-मौलवी सभी धर्म के ठेकेदार ही अपने-अपने स्वार्थ के उद्देश्य से निरीह जनता को लूट रहे थे, गुमराह कर रहे थे । इसीकारण कबीर ने प्रस्तुत पद में स्वयं का धर्माचरण स्पष्ट कर दिया हैं, जिससे तत्कालीन समाज-दर्शन का स्पष्ट पता चलता हैं ।

कबीर की स्पष्टोक्ति हैं कि जल में स्नान मात्र से मुक्ति की प्राप्ति हो जाए, तो मछली नित्य ही जल में स्नान के कारण मुक्त हो गयी होती । किन्तु

मीन और जीव दोनों ही स्नान से मुक्त नहीं हुए हैं । इसलिए बारबार आवागमन चक्र में पड विभिन्न योनियों में भ्रमित होते हैं । जो मन में कलुषा रखते हुए, तीर्थ - स्नान करता है, वह स्वर्ग लाभ नहीं कर सकता । समस्त जगति पाखण्ड और ढोंग कर भ्रमित हो रही है, किन्तु प्रभु अज्ञानी नहीं हैं । सब कुछ देखता है, उसी के चक्षु के सामने ही तुम समस्त कुकर्म करते हो । उससे कुछ भी अदृश्य नहीं है । अपने इन विचारों से कबीरदास ने न केवल तत्कालीन समाज का सही चित्र खींचा है, बल्कि सच्चे धर्म से पथभ्रष्ट हुवों को सही मार्गदर्शन भी किया है ।

कबीरदास ईश्वर की सच्ची अनुभूति को महत्व देते हैं और तीर्थस्थानों की चली आयी हुई महत्ता की व्यर्थता स्पष्ट करते हुए कहते हैं, अगर काशी में या मगहर में कहीं भी कबीरदास ने देहत्याग किया तो क्या हुआ ? क्योंकि उनके राम तो उनके हृदय में ही बसते हैं और इसीलिए काशी में अगर शरीर-त्याग किया तो राम का काम ही क्या रहेगा ? वह तो अपने भक्त का उद्धार काशी में भी करता है और मगहर में भी करता है । भावार्थ यह है कि मगहर में शरीर-त्यागने पर भी मुक्ति मिल ही जाती है, जिस के कि हृदय में राम बसे हैं ।

" क्या काशी क्या मगहर ओरा ।
(जोपै) हृदय राम बसु मोरा ।।
जो काशी तन तजहिं कबीरा ।
(तो कहु) रामहिं कवन निहोरा ।। " १४१

इससे यही सिद्ध होता है कि कबीरदास ने अपने समय के समाज का दर्शन कितने सुस्पष्ट शब्दों में चित्रित किया है ।

जप-तप --

आडम्बर पूर्ण जप-तप के संबंध में कबीर ने कड़ी आलोचना की है । वे कहते हैं -- जप, तप, तीर्थ, व्रत, एवं विभिन्न देवताओं में विश्वास करना निरर्थक है, थोथा है । उसमें तो व्यक्ति को उसी प्रकार निराशा हाथ लगती है, जिस प्रकार सेंबर

के फल में टाट के मारने से तोते को निराशा ही होती हैं ।

" जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ व्रत बेसास ।
सूवैं सैंबल सेविया, यौं जग चल्या निरास ।। " [१४२]

कबीर मुसलमान समाज के आडम्बरों के भी उतने ही विरोधी थे, जितने की हिन्दू-समाज के । उसी स्वर में उन्होंने सुन्नत, हज-काबा, अजान, कुर्बानी, ताजिएदारी आदि की खिल्ली उडाई हैं ।

सुन्नत --

अगर सुन्नत करने से कोई तुरक हो जाता तो औरतों का क्या किया जाए ? नारी तो पति की अर्धांगिनी होती हैं, इसलिए कोई हिन्दू हैं तो हिन्दू ही रहिए ।

" सुन्नति किये तुरक जो होइगा औरत का क्या करियैं ।
अर्ध्द सरीरी नारि न छोडे, ताते हिन्दू ही रहियैं । " [१४३]

प्रस्तुत दोहे द्वारा कबीरदास के तत्कालीन समाज में मुसलमान शासक के आतंक के कारण हिंदू प्रजा, जो मुसलमान बनती जा रही थी, बिना सोचे समझे धर्मांतर कर रही थी उस पर प्रकाश पडता हैं, पर कबीर स्पष्ट वक्ता थे, निर्भय संत थे इसीसे उन्होंने परिणाम का डर मन में न रखते हुए हिंदुओं को धर्मांतर न करने की स्पष्ट सलाह दी हैं । कहते हैं कबीर की इसी स्पष्टता के कारण सिकंदर लोधी द्वारा कबीर पर बहुत अत्याचार ढाये गये थे ।

हज-काबा --

कबीरदास शेख-मुल्लाओं को बाँग देने को तथा हज-काबे जाने की बातों को फटकारते हुए कहते हैं जिसका दिल साफ नहीं उसे खुदाई कहाँ से प्राप्त होगी ?

" सेख सबूरी बाहिरा, क्या हज काबैं जाइ ।
जाकी दिल साबित नहीं, ताकौं कहा खुदाइ ।। " [१४४]

अजान --

मुल्ला जो मुनारे पर चढ़कर बाँग देते हैं, उसकी खिल्ली उडाते हुए कबीरदास कहते हैं --` किसी कारण तू इस प्रकार बाँग देता है ? साँई तो बहिरा नहीं है, वह तो तुम्हारे अंत:करण में ही है । अत: उसे चिल्लाकर पुकारने की आवश्यकता नहीं ।

" कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ।
जा कारिन तू बांग देहि दिल ही भीतरि जोई ।। ` १४५

कबीर कहते हैं कि कंकड,पत्थर जोड-जोड कर मस्जिद बनाते हैं और उसके ऊपर चढ़कर बाँग देते हैं, क्या खुदा बहरा है ? कहने का भाव यह है कि मन से ईश्वर का चिंतन करने की आवश्यकता है, उसका दिखावा करने की कोई जरूरत नहीं ।

" काँकर पाथर जोरि कर मस्जिद लया चिनाय ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाया ।। ` १४६

कुर्बानी और हलाल --

कबीरदास कहते हैं` जिस गोमाता को हम दुहते हैं, उसका दूध पीते हैं, उसका वध तुम क्यों करते हो ?

` जाको दूध धाइ करि पीजै । ता माता को बध क्यों कीजै ।`१४७

तत्कालीन समाज भूतदया का महान तत्त्व किस प्रकार भूल गया था यही महत्वपूर्ण बात इस दोहे द्वारा कबीरदास ने स्पष्ट की है और संकेत दिया है कि जो आत्मा मनुष्य में होती है, वही आत्मा प्राणी-मात्र में भी होती है ।

व्रत एवं उपवास --

हिन्दू चौबीस एकादशी करते हैं और मुसलमान तीस रोजा करते हैं। हिन्दू एकादशी को भजन के दिन होने से परमेश्वर का दिन कहते हैं। मुसलमान रोजा के दिनों को खुदा का दिन कहते हैं। इस प्रकार कोई अन्य दिवस ईश्वर का दिन नहीं मानते। तो फिर ग्यारह मास ईश्वर के नहीं हुए तो उन दिनों हिन्दू-मुसलमानों का संरक्षण तथा सन्सार के व्यवहार कौन चलाता है ?

" हिंदू एकादशि करे चौबीसो, रोजा मुसलमाना ।
ग्यारह मास कहो किन टारे एके माहे न आना ।। "[१४८]

कबीर का इस विषय में स्पष्ट उत्तर है कि समाज के लिए प्रत्येक दिन के प्रत्येक क्षण में ईश्वर की शक्ति संचरित है। उसकी अनुज्ञा के बिना सन्सार के कोई भी कार्य नहीं होते।

अंत में कबीर इस असार सन्सार में सुकृत्य क्या है, किस कर्म से शिवत्व प्राप्त किया जा सकता है, उसकी स्पष्ट घोषणा करते हैं।

" जिन दुनियाँ महं रचि मसजीदा। झूठा रोजा झूठा ईदा।
सांचा एक अल्लाह को नामा। जाको नैय-नय करहु सलामा ।। "[१४९]

कबीर उस संसार में एक मात्र जग नियंता परम प्रभु के चरणों की सेवा को ही सुकृत्य समझते हैं, अन्य और कुछ नहीं।

माला, तिलक और वस्त्र --

कबीर अंत:करण पूर्वक किए जाने वाले नाम जप को ही (सुमिरण) मानते हैं। जिस माला-फेरन में मन का योग नहीं उसकी वे इस प्रकार आलोचना करते हैं। ' माला तो हाथ में फिरती रहती है, जीभ मुख में फिरती रहती है और मन दसों दिशाओं में फिरता रहता है, यह तो ईश्वर का नामस्मरण नहीं।

"कर में तो माला फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि ।
मनुवा तो चहुदिशि फिरै, यह तो सुमिरन नाँहि ।।"[१५०]

एक जगह कबीरदासजी ने यह भी कहा है "माला पहनने से कुछ नहीं होता, अंत:करण की गांठ ही खोलनी चाहिए ।"

"माला पहर्यों कुछ नहीं, गाँठि हिरदा की खोइ ।"[१५१]

कबीर के समाज में माला फेरनेवाले और माला पहनने वाले बहुत थे । पर कहीं माला फेरने से हरि मिलता है ? माला तो लकड़ी की है । काठ में हरि कैसे मिल सकता है ?

"माला तिलक पहरि मन मानां,लोगनि रांम खिलौना जानी ।"[१५२]

माथा मुंडाकर माला पहनने से कहीं भक्ति होती है ? माला-तिलक तो ऊपरी संसारी भेद है । सही माला तो अंत:करण की शुध्दता है ।

"माला पहर्यां कुछ नहीं, भगति न आई हाथि ।
माथा मुंछ मुंडाई करि,चल्या जगत कै साथि ।"[१५३]

मूर्ति-पूजा --

अशिक्षा तथा उचित ज्ञान के अभाव में हिन्दुओं ने मूर्ति को ही भगवान मान लिया था । उसकी पूजा में ही लोग धर्म की इतिश्री मान बैठे थे । कबीर ने इसका भी तरह-तरह से विरोध किया ।

कबीरदास कहते हैं "मनुष्य पत्थर के पुतले को,मूर्ति को ईश्वर मानकर पूजते हैं, और जो इस पाषाण-मूर्ति को ईश्वरी मानते रहते हैं, वे कालधारा में बह जाते हैं --

"पाहण केरा पूतला,करि पूजै करतार ।
इही भरोसै जे रहे, ते बूडे काली धार ।"[१५४]

कबीरदास कहते हैं कि अगर पत्थर को पूजने से ईश्वर प्राप्ति होती तो मैं तो पहाड की ही पूजा करता । इस प्रकार मूर्ति-पूजा की कबीरदास ने खिल्ली उडाई हैं ।

'पाथर पूजे हरि मिले,तौ मैं पूजूँ पहार ।'[१५५]

कबीर के समय तक जनता नितांत पथ भ्रष्ट हो चुकी थी । हिन्दू और मुसलमान धर्म के वास्तविक रूप को भूलकर आडम्बर में प्रवृत्त थे । हिन्दू पत्थरों की पूजा कर रहे थे और मुसलमान पीर,अवलियों द्वारा प्रदर्शित पथ पर अग्रसर थे । साधु लोग बाह्याचारों के दास बने हुए धन एकत्र कर रहे थे । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का उद्धरण देना समिचीन होगा ।-

'कबीर सर्वत्र एक विचित्र प्रकार का अभाव अनुभव कर रहे थे । सारा सन्सार अपनी-अपनी आग में जल रहा था । ऐसा कोई नहीं मिलता था, जिस से लग कर वे रह सके । कसाला यह था कि जिससे हृदय की बात कही जाती वही डंक मार देता, निर्मम भाव से नि:शंक होकर जिस आदमी से दिल की बात कही जा सके ऐसा कोई मिल नहीं रहा था ।'[१५६]

निष्कर्ष --

उपर्युक्त विवेचन से प्रकट हैं कि इस युग के विविध मतमतान्तरों द्वारा प्रचलित विविध बाह्याडम्बरों के साथ ही अनेक धार्मिक कालबाह्य रूढियाँ सामान्यत: समस्त धार्मिक जीवन में प्रचलित थीं । जिन की रूढता के कारण जनता उन्हें ही जीवन का सर्वस्व मान बैठी थी । ये आस्थाएँ तथा बाह्याचार अपने मूल रूप को छोडकर साधना गत विकृतियों के साधन बन चुके थे । अत: कबीर ने जो उनका विरोध किया उस में उन का युग प्रवर्तक व्यक्तित्व प्रकाश में आता हैं । इन कारणों के प्रकाश में यह कहा जा सकता हैं कि वें भारत की सांस्कृतिक परम्परा की एक महत्वपूर्ण कडी के रूप में हमारे सामने आते हैं । धर्म के पवित्र रूप को बाह्याचारों और असत्य ने इस प्रकार आच्छादित कर लिया था कि असत्य ही सत्य के रूप मे प्रतिभासित-सा प्रतीत होने लगा । अंधविश्वासों ने सदविश्वासों का स्थान ग्रहण कर लिया ।अहिंसा,

त्याग और सत्य का स्थान पशु बली,नर बली और हिंसा ने ग्रहण कर लिया । साधना के स्थान पर बाह्याचारों की प्रतिष्ठा थी।कबीर ने इस प्रवृत्ति की कटु आलोचना की । कबीर के समय ब्राह्मण बहु पठित तो थे, पर उन्हें तत्वज्ञान नहीं था । योगी माया में लिप्त तथा धूर्त साधक जन ,निद्रा,मैथुन और नारी में लिप्त थे । मंत्र देनेवाले गुरू अहंकारी थे ।

इस स्थिति में कबीर ने पौराणिक हिन्दू मत की धज्जियाँ उडाई है । उसकी अति कर दी है, किन्तु यह भी अवश्य स्वीकार करना पडेगा कि तत्कालीन धार्मिक साधना में अत्यधिक आडम्बर और बाह्याचार के तत्त्व समाहित थे । लेकिन यह अधिक सत्य है कि कबीर ने देशकाल की दुर्बलताओं को समाज में ताण्डव नृत्य करते देखकर क्षोभ व्यक्त किया है और समाज की दुर्बलताओं को बडी हेय दृष्टि से देखा है । डा.सरनाम सिंह का मत है ` दुर्बलताओं की वे कटु निंदा और कहीं - कहीं तीव्र भर्त्सना भी करते हैं । जहाँ वे निंदा से भर्त्सना पर उतर आते है वहीं वे अति उग्र हो जाते हैं । इसमें संदेह नहीं कि उस भर्त्सना के पिछे उनका प्रगतिशील दृष्टिकोन भी छिपा हुआ है । फिर भी वह कटु आलोचक है, अति उग्र है, इस तथ्य से आँखें नहीं मोडी जा सकती । `

कबीर ने सब धर्मों को एक धरातल पर लाने के लिए ही नहीं वरन एक बनाने के लिए जो प्रयत्न किए उन सब का सम्बन्ध ईश्वर से है । इसी प्रकार मानव मात्र में एकता लाने के उपक्रम में भी उन्होंने ईश्वर को ही प्रतिष्ठित किया है । कबीर ने सुन्दर मानव-जीवन की कल्पना की है । इस में संदेह नहीं कि वे ज्ञान-ज्योति को महत्व प्रदान करते है । किन्तु इस में भी सन्देह नहीं कि भाव स्नेह को भी समुचित गौरव प्रदान करते है ।

इस प्रकार कबीर की सद्द समाज प्रियता उनकी विचार धारा में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित दिखलायी पडती है । उन्होंने परम्परागत अंधविश्वासों,प्रथाओं और संस्थाओं का मूलोच्छेदन करके धर्म,दर्शन,और समाज सभी क्षेत्रों में बुध्दिवादी साम्यवाद प्रतिष्ठित किया था । अपने लक्ष्य की पूर्ति उन्होंने इस में कोई भी सन्देह

नहीं कि बड़ी कटुता के साथ की हैं। यह कटुता कहीं - कहीं अति रूप में दिखलायी पड़ती हैं। इनको देख कर ऐसा लगता हैं कि कबीर किसी प्रकार की पक्षपात पूर्ण दुर्भावनाओं से प्रेरित रहे होंगे। किन्तु हमारी समझ में इस की कटु आलोचनाओं के मूल में उनकी अक्खड़ प्रकृति बहुत थी, पक्षपातपूर्णता (पक्षपातपूर्णता) बहुत कम। वास्तव में उनका साम्यवाद भारत के लिए एक मौलिक देन हैं। इसी के आधार पर चलकर आज भी भारत का उद्धार हो सकता हैं।

डा.हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने कबीर के लिए जो लिखा हैं `वे मुसलमान नहीं थे, हिन्दू होकर भी हिन्दू नहीं थे, साधु होकर भी अगृहस्थ नहीं थे, वे वैष्णव होकर भी वैष्णव नहीं थे, वे योगी होकर भी योगी नहीं थे, वे भगवान के नृसिंहअवतार की मानव प्रति-मूर्ति थे। नृसिंह की भाँति वे असंभव समझी जानेवाली परिस्थितियों के मिलन बिन्दु पर अवतीर्ण हुए थे जहाँ एक ओर ज्ञान निकल जाता हैं, दूसरी ओर भक्ति मार्ग। जहाँ एक तरफ निर्गुण भावना निकल जाती हैं और दूसरी ओर सगुण साधना। वे उस प्रशांत चौराहे पर खड़े थे, जहाँ से वे दोनों ओर देख सकते थे और परस्पर में विपरित दिशा को गए हुए मार्गों के गुण-दोष उन्हें स्पष्ट दिखायी दे जाते थे। यह कबीर का भगवत्-दत्त सौभाग्य था। उन्होंने इसका खूब उपयोग किया।

..

संदर्भ सूची

संदर्भ क्रमांक	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१	कबीर का सामाजिक दर्शन	डा.प्रहलाद मौर्य	१६१	पुस्तक संस्थान कानपुर-१२ १९७४ ई.
२	कबीर काव्य-कौस्तुभ	डा.बालमुकुन्द गुप्त	३५	साहित्य संगम आगरा-३ चतुर्थ संस्करण १९७१
३	कबीर-वचनामृत-सार	डा.मुन्शीराम शर्मा	११	ग्रन्थम रामबाग कानपुर-१२ द्वितीय संस्करण अगस्त १९७२
४	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	१७४	राका प्रकाशन इलाहाबाद-२ पंचम संस्करण १९७५ ई.
५	कबीर ग्रन्थावली सटीक	प्रो.पुष्पपालसिंह	२५५	अशोक प्रकाशन नई सड़क दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

संदर्भ क्रमांक	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
६	कबीर ग्रंथावली	डा. माताप्रसाद गुप्त	२०	संपादक, माताप्रसाद गुप्त, दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स, आगरा १ फरवरी १९६९
७	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो. पुष्पपाल सिंह	३१६	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
८	कबीर ग्रन्थावली	डा. शुक्ल डा. चतुर्वेदी	९८५	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७
९	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९५	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
१०	कबीर ग्रन्थावली	डा. सावित्री शुक्ल डा. चतुर्वेदी	५०२	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस, आगरा २

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन ।प्रकाशक एवं संस्करण
११	कबीर ग्रन्थावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	४९८	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियवंदा प्रेस, आगरा-२
१२	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१६६	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१३	कबीर ग्रन्थावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	८५	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियवंदा प्रेस आगरा-२
१४	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	८५	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियवंदा प्रेस आगरा-२
१५	कबीर और अरवा तुलनात्मक अध्ययन	डा.रामनाथ शर्मा	१२१ १२२	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी-१ प्रथम संस्करण १९८३ ई.

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन ।प्रकाशक एवं संस्करण
१६	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	९४	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
१७	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१२३	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली अप्रैल १९६१
१८	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१२३	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली अप्रैल १९६१
१९	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१२३	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली अप्रैल १९६१
२०	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	९५	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
२१	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९६	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
२२	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९६	साहित्य भवन(प्रा.) लि., इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
२३	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९६	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
२४	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९६	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
२५	कबीर काव्य कौस्तुभ	डा. बालमुकुन्द गुप्त	१८	साहित्य संगम आगरा-३ चतुर्थ संस्करण १९७१

संदर्भ क्रमांक	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन ।प्रकाशक एवं संस्करण
२६	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायन	३१६	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत् २०२४
२७	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्याप्रसाद त्रिपाठी	२९४	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर-१९७४ ।
२८	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्याप्रसाद त्रिपाठी	१५०	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
२९	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	१७९, १८०	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत् २०२४
३०	संत कबीर	डा.रामकुमार वर्मा	६८	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद आठवी आवृत्ति १९६७

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
३१	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	४०२	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियवंदा प्रेस,आगरा
३२	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३४५	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
३३	कबीर और अरवा तुलनात्मक अध्ययन	डा.रामनाथ शर्मा	३२४ ३२५	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी-१ प्रथम संस्करण १९८३ ई.
३४	युगपुरनष्टा कबीर	डा.रामलाल वर्मा डा.रामचन्द्र वर्मा	१८२	भारतीय ग्रंथ निकेतन दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७८
३५	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१२८	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,दिल्ली अप्रैल १९६१
३६	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१२९	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,दिल्ली अप्रैल १९६१

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
३७	कबीर और उनका काव्य	डा. भोलानाथ तिवारी	१२९	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली अप्रैल १९६१
३८	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२९७	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
३९	संत कबीर	डा. रामकुमार वर्मा	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-१ आठवीं आवृत्ति १९६७
४०	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३२३	राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
४१	कबीर ग्रंथावली	डा. सावित्री शुक्ल डा. चतुर्वेदी	११३	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७, मुद्रक प्रियंवदा प्रेस आगरा
४२	कबीर ग्रंथावली	डा. सावित्री शुक्ल डा. चतुर्वेदी	९१३	प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ-७ मुद्रक प्रियंवदा प्रेस, आगरा

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
४३	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९७	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
४४	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९८	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
४५	कबीर और उनका काव्य	डा. भोलानाथ तिवारी	१२७	राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली अप्रैल १९६१
४६	कबीर और उनका काव्य	डा. भोलानाथ तिवारी	१२७, १२८	राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली अप्रैल १९६१
४७	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९८	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
४८	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	९८	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
४९	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२४४	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
५०	कबीर और उनका काव्य	डा. भोलानाथ तिवारी	१२९	राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली अप्रैल १९६१
५१	कबीर और उनका काव्य	डा. भोलानाथ तिवारी	१२९	राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली अप्रैल १९६१
५२	कबीर जीवन और दर्शन	डा. भोलानाथ तिवारी	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
५३	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
५४	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१३०	राजकमल प्रकाशन (प्रा.)लिमिटेड दिल्ली अप्रैल १९६१
५५	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१३०	राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड दिल्ली अप्रैल १९६१
५६	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ अप्रैल १९६१
५७	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ अप्रैल १९६१

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
५८	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	१४४	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
५९	युगपुरुष कबीर	डा.रामलाल वर्मा डा.रामचन्द्र वर्मा	१८२	भारतीय ग्रंथ निकेतन दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७८
६०	कबीर-काव्य - कौस्तुभ	डा.बालमुकुन्द गुप्त	४६	साहित्य संगम आगरा-३ चतुर्थ संस्करण १९७१
६१	कबीर ग्रन्थावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२०१	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ मुद्रक प्रियवंदा प्रेस, आगरा
६२	कबीर ग्रन्थावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१७३	अशोक प्रकाशन नई सडक दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
६३	कबीर-काव्य-कौस्तुभ	डा.बालमुकुन्द गुप्त	४९	साहित्य संगम आगरा-३ चतुर्थ संस्करण १९७१
६४	कबीर ग्रन्थावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२०१	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ मुद्रक-प्रियंवदा प्रेस आगरा
६५	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	३३१	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस आगरा
६६	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल	६४८	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस आगरा
६७	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	१०१	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
६८	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	३७०	अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७३

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
६९	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	१५६	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस आगरा
७०	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१६३	अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
७१	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	१७९	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
७२	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१५६	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
७३	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	१८५	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस.आगरा
७४	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३१२	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
७५	युगपुरुष कबीर	डा.रामलाल वर्मा डा.रामचन्द्र वर्मा	१३७	भारतीय ग्रंथ निकेतन दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७८
७६	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१५७	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
७७	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	१८०	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस आगरा
७८	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१५५	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
७९	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२००	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस आगरा
८०	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायन	३०३	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत् २०२४

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
६१	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	३०४	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
६२	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	७०१	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
६३	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	३६७	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
६४	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	४२०	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
६५	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	१४५	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस.आगरा
६६	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२७३	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली प्रथम संस्करण १९७१
६७	कबीर और अरवा तुलनात्मक अध्ययन	डा.रामनाथ शर्मा	३५०	विश्वविद्यालय प्रका., वाराणसी-१ प्रथम संस्करण १९८१

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
८८	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	३१७	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ -७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
८९	कबीर साहित्य की भूमिका	डा.रामरतन भटनागर	४३	रामनारायण लाल, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता,इलाहाबाद १९५०
९०	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	२३	राका प्रकाशन इलाहाबाद-२ पंचम संस्करण १९७५ ई.
९१	संत कबीर	डा.राम कुमार वर्मा	६९	साहित्य भवन(प्रा.) लि.,इलाहाबाद आठवीं आवृत्ति १९६७
९२	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	७५	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
९३	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	७५	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४

सं. क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
९४	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	७६	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ सितम्बर १९७४ प्रथम संस्करण
९५	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२५४	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
९६	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१५८	अशोक प्रकाशन नई सडक,दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
९७	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	४९८	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
९८	संत कबीर	डा.राम कुमार वर्मा	९७	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद आठवी आवृत्ति १९६७
९९	संत कबीर	डा.राम कुमार वर्मा	९६	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद आठवी आवृत्ति १९६७

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१००	संत कबीर	डा. राम कुमार वर्मा	९४	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद आठवी आवृत्ति १९६७
१०१	संत कबीर	डा.राम कुमार वर्मा	९९	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद आठवी आवृत्ति १९६७
१०२	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२०४	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेम आगरा
१०३	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा. चतुर्वेदी	२२८	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१०४	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	२१९	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१०५	संत कबीर	डा.राम कुमार वर्मा	१०१	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद आठवी आवृति १९६७

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१०६	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	१७८	राका प्रकाशन इलाहाबाद-२ पंचम संस्करण १९७५ ई.
१०७	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२६५	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
१०८	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	३१७	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१०९	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२९६	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
११०	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो. पुष्पपाल सिंह	३५८	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१११	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	८३	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
११२	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	९३	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
११३	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	८७६	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
११४	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१८४	अशोक प्रकाशन नई सड़क ,दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
११५	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो. पुष्पपालसिंह	२२३	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
११६	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२००	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
११७	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२५३	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदाप्रेस,आगरा
११८	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	४४७	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
११९	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	९०	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
१२०	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२६३	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियवंदा प्रेस, आगरा
१२१	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	९१	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
१२२	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	९२	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
१२३	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	२००	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१२४	कबीर साहित्य की भूमिका	डा.रामरतन भटनागर	१५९	रामनारायण लाल प्रकाशक तथा पुस्तक - विक्रेता, इलाहाबाद १९५०
१२५	कबीर साहित्य की भूमिका	डा.रामरतन भटनागर	१६१	रामनारायण लाल प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद १९५०
१२६	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३०२	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
१२७	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	३३५	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत् २०२४
१२८	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	१७९	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस, आगरा
१२९	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१८२	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन ।प्रकाशक एवं संस्करण
१३०	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	३३६	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत् २०२४
१३१	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३२२	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
१३२	युगपुरुष कबीर	डा.रामलाल वर्मा डा.रामचन्द्र वर्मा	१६५	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७८
१३३	युगपुरुष कबीर	डा.रामलाल वर्मा डा.रामचन्द्र वर्मा	१६४	भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७८
१३४	कबीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	३१५	राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६ प्रथम संस्करण १९७१
१३५	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	९८	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१३६	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	८०२	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१३७	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	८९८	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१३८	कबीर-वाणी संग्रह	डा.परासनाथ तिवारी	१७८	राका प्रकाशन इलाहाबाद-२ पंचम संस्करण १९७५ ई.
१३९	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२१४	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१४०	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	४८३	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१४१	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	२८६	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण, सितम्बर १९७४

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशक । प्रकाशन एवं संस्करण
१४२	कबीर-काव्य-कौस्तुभ	डा.बालमुकुन्द गुप्त	४०	साहित्य संगम आगरा-३ चतुर्थ संस्करण १९७१
१४३	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
१४४	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	१७७	राका प्रकाशन इलाहाबाद-२ पंचम संस्करण १९७५ ई.
१४५	संत कबीर	डा.राम कुमार वर्मा	९८	साहित्य भवन(प्रा.) लि.,इलाहाबाद आठवी आवृत्ति १९६७
१४६	कबीर और उनका काव्य	डा.भोलानाथ तिवारी	१३०	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली अप्रैल १९६१
१४७	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	१००	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड,इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१४८	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	२८९	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
१४९	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	२८९	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४
१५०	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	६३	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१५१	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो.पुष्पपाल सिंह	१९०	अशोक प्रकाशन नई सडक, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१५२	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	७८८	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस,आगरा
१५३	कबीर ग्रंथावली	डा.सावित्री शुक्ल डा.चतुर्वेदी	२१७	प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-७ प्रियंवदा प्रेस आगरा

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१५४	कबीर ग्रंथावली सटीक	प्रो. पुष्पपाल सिंह	१८५	अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६ चतुर्थ संस्करण १९७२
१५५	कबीर जीवन और दर्शन	डा.भोलानाथ तिवारी	९८	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद-३ प्रथम संस्करण १९७८
१५६	कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डा.आर्या प्रसाद त्रिपाठी	२९०	सरोज प्रकाशन इलाहाबाद-२ प्रथम संस्करण सितम्बर १९७४

..